द ऐशेज़ दैट मेड द ट्री ब्लूम

कागज़ के फूल

यह जीवनी नमूना केवल चित्रात्मक उद्देश्यों के लिए है और हमारे द्वारा किए गए कार्य के एक उदाहरण के रूप में कार्य करती है। प्रमुख किरदारों और चरित्रों के नामों को गोपनीयता के उद्देश्यों को बनाए रखने के लिए बदल दिया गया है। हमारे द्वारा रची गई प्रत्येक जीवनी हमारे क्लाइअन्ट् की कहानी और पसंद के अनुसार तैयार की जाती है।
सभी अधिकार कागज के फूल द्वारा सुरक्षित हैं।

Text by Namit Maheshwari on behalf of *Kagaz ke Phool.*
Design & cover by Rupal on behalf of *Kagaz ke Phool.*
Text is Private & Confidential.

First Print on February 2022

प्रस्ताव

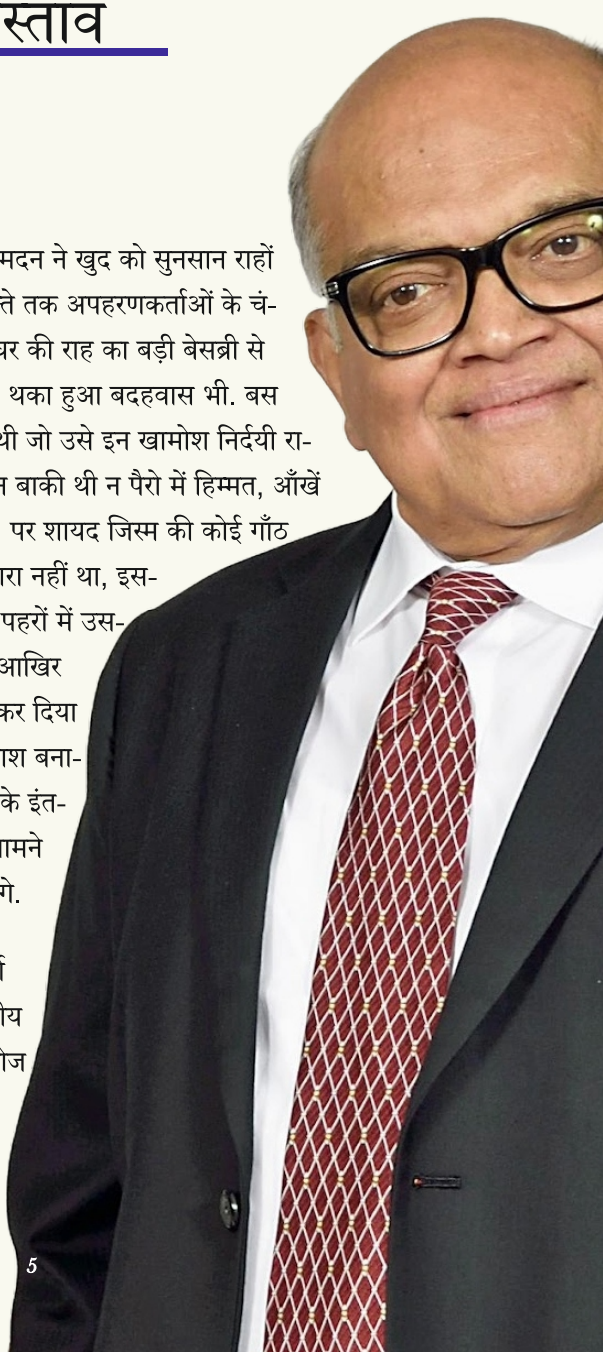

घुप स्याह रंग में रंगे हुए आकाश के तले, मदन ने खुद को सुनसान राहों के एकांत पथिक के रूप में पाया. एक हफ्ते तक अपहरणकर्ताओं के चंगुल में गिरफ्त रहने के बाद, मदन अपने घर की राह का बड़ी बेसब्री से तलाश रहा था . हताश भी था निराश भी, थका हुआ बदहवास भी. बस वो आँखे किसी ऐसे चेहरे को तलाश रही थी जो उसे इन खामोश निर्दयी रास्तों से दूर ले जा सके. पर बदन में ना जान बाकी थी न पैरो में हिम्मत, आँखें खोले रखना भी देह को भारी लग रहा था. पर शायद जिस्म की कोई गाँठ ऐसी थी जिसे अनजान रास्तों में मरना गंवारा नहीं था, इसलिए वो चलता रहा. और रात के आखिरी पहरों में उसने अपने घर पर दस्तक दी. इस दस्तक ने आखिर उसे उन भयावह पलो की यादों से बेज़ार कर दिया जिसने उसे पिछले एक हफ्ते से ज़िंदा लाश बनाकर छोड़ा था. यहाँ घर पर जो लोग मदन के इंतज़ार में रुंआसे हो चले थे, वो उसे अपने सामने देखकर खुशियों के आंसू झर झर बहाने लगे.

मदन की गुमशुदगी के इन त्रासदीपूर्ण दिनों के दौरान उसके भाई प्रवीण ने स्थानीय अधिकारियो के साथ मिलकर मदन की खोज में ज़मीन आसमान एक कर दिया पर हर बार ये खोज एक मोड़ पर जाकर ठहर

Madan with his father Nemichand

जाती थी. फिरौती की रकम वसूलने के बाद भी अपहरणकर्ताओं ने मदन को नहीं छोड़ा, जिससे उसका पूरा परिवार आशंकाओं के काले बादलों से घिर गया . परिवार के हौसले दम तोड़ने लगे थे कि मानो किसी दैवीय कृपा से मदन लौट आया. आज न जाने कितने दिनों के बाद मदन और उसके परिवार ने निवाला अपने गले से नीचे उतारा था. इसी के साथ मदन ने अपनी अपहरण की दर्दनाक कहानी सुनाई जिसे सुनकर पूरा परिवार सहर गया, और ये वादा किया कि अपने परिवार पर फिर ऐसी आंच नहीं आने देंगे.

मदन को निशाना क्यों बनाया गया और उसके साथ क्या हुआ, ये जानने के लिये हमें पूर्वी भारत का रुख करना पड़ेगा, जहाँ हमें ये जगह मिलेगी जिसका नाम है कोडरमा, जो कभी बिहार का हिस्सा हुआ करता था लेकिन अब झारखण्ड का हिस्सा है. उस दौर में टूटी सड़को से रांची पहुँच पाना किसी चमत्कार से कम नहीं था, और कोडरमा यहाँ के प्रसिद्द नगर झुमरी तलैया के पास था (जिसे आमतौर पर तलैया नाम से जाना जाता था). झुमरी तलैया का ज़िक्र जाने क्यों हमारे फ़िल्मी गानों में बहुत सुनने को मिलता है. शायद ये शब्द सुनने को रोचक लगता हो, पर इसकी असली वजह क्या है इससे शायद ही कोई वाकिफ हो. झुमरी तलैया के पास स्थित था कोडरमा, जो भारत में माइका की खान के रूप में विख्यात था. ये एक ऐसा इलाका था जो संसाधनों मी बेहद समृद्ध था और देश के सबसे बड़े माइका उत्खनन परियोजना का गढ़ भी था.

शारदा खानदान की जड़े मदन के दादा से होकर जाती थी जो एक समय राजस्थान से आये थे, और अच्छे जीवन और नौकरी की तलाश में तलैया की ओर चले गए. नए शहर के नए अवसरों को अंगीकार करने की अकूट चाह ने उन्हें उनके ही परिवार से जुदा कर दिया. पर इस नयी दुनिया में आकर भी उन्होंने अपने सपनो को सुर्खाब के पर नहीं लगने दिए. बिना किसी लाग लपेट के, उन्होंने जीवन की सरलताओ को सहर्ष स्वीकार किया जो नेमत उन्हें खुदा ने बख्शी थी. उन्होंने खुद को नौकरीपेशा जीवन में ही संतुष्ट कर लिया था.

उनका बीटा नेमीचंद उनके ठीक विपरीत निकला. न केवल नेमीचंद की आकांक्षाएं अपनी ज़मीन छोड़कर आकाश को फतह करने की चाह रखती थी बल्कि उसके अंदर मौजूद ललक थी नयी राहें तलाशने की और हौसला था जोखिम लेने का. और इसी महत्वाकांक्षा ने

उन्हें उनके पिता के सरकारी 'बाबू' वाले पथ से विमुख कर दिया. उनकी चाह थी अपना उद्यम शुरू करने की, जिसके लिए उनके संसाधन तो सीमित थे लेकिन उनका निश्चय असीमित. उनकी आकांक्षाएं आसमान में ऊँची हिलोरे मार रही थी जो ससमयो से परे जाने को तत्पर खड़ी थी. उन्होंने अपने लिए एक नया रास्ता अख्तियार था जिसका ध्येय भी उनका था और कर्म भी.

और इन आँखों ने जो सपना कई बरस पहले देखा था वही आज शारदा के व्यापरिक साम्राज्य के रूप में परिणित हुआ. ये साम्राज्य अपने असीम विस्तार की पराकाष्ठाओं को निरंतर पार करके आज माइका से लेकर उत्पादन के हर आयाम में मौजूद था. ये कंपनी इस बात का सबूत थी कि अगर आँखों में सपने देखने कि हिम्मत और मन में उसे सच करने का हौसला हो तो व्यक्ति कहीं भी पहुंच सकता है. अपनी कभी न हार मानने के दृढ़संकल्प और एक अलग रास्ता तैयार करने कि इच्छा ने शारदा कंपनी को इस मुकाम तक पहुंचाया था.

अध्याय 1

चुनौतियाँ का सामना:
नींव की स्थापना

मदन के पिता नेमीचंद शारदा परिवार में व्यापर शुरू करने वाले पहले व्यक्ति थे. अपने पास मौजूद आखिरपाई तक को दांव पर लगाकर माइका उत्पादन इकाई शुरू की थी. उस दौर में कोडरमा माइका का पर्याय माना जाता था. नेमीचंद वहां की खानों से कच्चा माल लेते थे फिर उन्हें तराशकर उन्हें स्थानीय रूप से बेचा करते थे. शुरुआत में उन्हें कई कठिनाईयां आई क्योंकि उन्हें इस व्यार का कोई भी अनुभव नहीं था. पर वो डेट रहे इस आशा में कि कभी न कभी किस्मत ज़रूर उन पर मेहरबान होगी. नेमीचंद ने शुरुआत में बहुत कठिन दिन देखे. एक तरफ काम का दबाव था दूसरी तरफ चार बच्चो का दायित्व. लेकिन इस पर भी नेमीचंद ने कभी उफ्फ नहीं की. अर्जुन के तीर की तरह उसका निशाना सधा रहा.

इन सभी दिक्कतों के बावजूद शारदा परिवार के लिए हर नया दिन एक नयी सीख लेकर आता था. मदन के पिता के लिए लिए व्यापर सीखने और आगे बढ़ने का साधन था. डगर कठिन थी पर वो भी कहाँ कम ज़िद्दी थे. उन्हें अपने काम में संतोष था और कुछ नया सीखने की ललक भी थी, जो उनसे उनके परिवार को विरासत में मिली. उन्होंने हर दिन का सामना इस विश्वास के साथ किया कि उनका वक़्त भी बदलेगा। जब परिवार का बड़ा बीटा मदन १२ साल का हुआ तो उसने भी अपने पिता के व्यवसाय में खुद को शामिल कर लिया . आगे चलकर छोटे बेटे प्रदीप भी इस व्यवसाय में उनके साथ जुड़ गए. अगले तीन दशकों में इस व्यवसाय और शारदा परिवार के भविष्य का कायापलट हो गया . एक स्टार्टअप से शुरू हुआ

Nemichand called at an event as guest

सफर एक विशाल बिज़नेस समूह में परिणित हो गया. नेमीचंद और उनके बेटों की दूसरदर्शिता का ही परिणाम था की ये व्यवसाय और आगे आगे जाने को तैयार खड़ा था. इस व्यवसाय की नयी पीढ़ी की कमान मदन ने संभाली और अपने पिता से मिली अमूल्य सीखो से माइका के व्यवसाय को और आगे ले गया. मदन व्यवसाय के सारे दांव पेंचो से वक़्क़िफ़ था. उसने इस व्यवसाय को नए मुकाम तक पहुंचाने की ठानी थी और खुद से ये वादा किया था की वो चाहे कुछ भी हो जाए हार नहीं मानेगा . ये वक़्त था अपने व्यववसाय को और आगे बढ़ाने का जिसका दारोमदार अब मदन के कंधो पर था. और यही से शुरू हुई शारदा परिवार की सफलता की यात्रा.

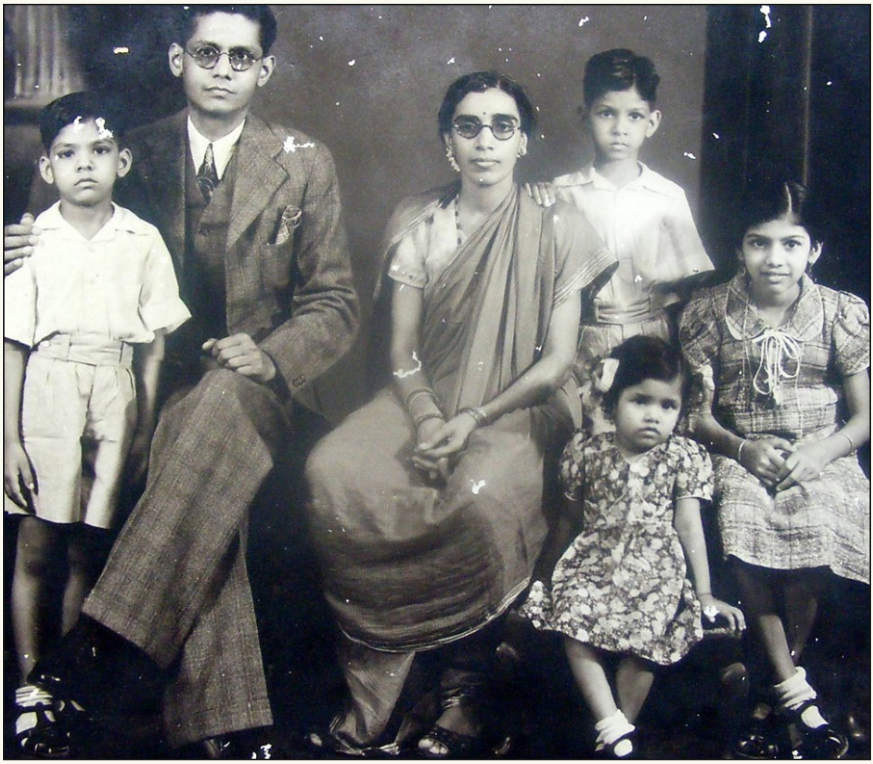

Nemichand Sharda with wife Shanti and his family

कहते है न कि "जैसा बोओगे, वैसा काटोगे". ये कहावत मदन के लिए पूरी तरह से चरितार्थ थी. उसके परिवार ने ने उसके परिवेश ने और उसके आरंभिक सालो के ताने बाने में बनी गयी थी उसकी और शारदा परिवार की सफलता की स्वर्णिम राह.

मदन के नामकरण की भी एक दिलचस्प कहानी थी. उनके कुल पुरोहित ने ज्योतिषीय गणनाओ के आधार पर उसका नाम किरोरीमल रखने की सलाह दी लेकिन मदन की माता जी को ये नाम और सुझाव बिलकुल पसंद नहीं आया और उन्होंने इस पुरातन नाम में नए रुझानों का सपंदन करते हुए मदन नाम का सुझाव दिया. परिवार मदन की माँ ने अनुनय विनय करके पंडित जी की स्वीकृति भी सहज हासिल कर ली. और यहाँ से एक ऐसे नाम की शुरुआत हुई जो पूरी ज़िन्दगी मदन के जीवन के साथ गुंजायमान रही. मदन का अपनी माँ के साथ बहुत गहरा रिश्ता था. मदन की माँ ने उनके और उनके भाई बहनो के भीतर व्यावसायिक समझ और जीवन का गूढ़ ज्ञान दोनों कूट कूट कर भर दिया था. पैसे की कमी भले ही थी पर उनके सपनो में किसी तरह की कमी नहीं होने दी गयी. मदन बहुत होनहार छात्र भले ही न हो, पर गणित की उसकी महारथ सर्व सिद्ध थी और पहाड़े उसे सहज ही याद हो जाय करते थे. हाँ अपने भाई प्रदीप के साथ शरारते करना उसे कई बार मुसीबत में दाल दिया करता था जिसके कारन उसे घर में अणि माँ और स्कूल में अपने टीचर, दोनों से सजा मिलती थी.

शारदा परिवार के बच्चे अपने स्कूल के लिए घर में बने कपड़े के थैलो में किताबे ले जाय करते थे. नाश्ते में उन्हें अक्सर बासी रोटी और दही ही नसीब होती थी और मिठाईयां अक्सर केवल महमानो के लिए ही रखी जाती थी. पूड़ी सब्ज़ी का भोग परिवार में कुछ विशेष अवसरों और त्योहारों में बनाया जाता था.

कोडरमा में त्योहारों के मौसम में के दौरान फैंसी ड्रेस का आयोजन किया जाता था . इसी आयोजन में भाग लेते हुए मदन ने भंगी का वेश धारण किया, बिना ये समझे कि इसके मायने क्या हो सकते है. जब मदन की माँ को ये मालूम चला तो वो काफी व्यथित हुई. घर आने पर मदन को माँ से खूब दांत पड़ी. अपनी माँ को निराश करने के दुःख नई

मदन को अंदर तक झकझोर दिया, और उसने निश्चय किया की आगे कुछ भी ऐसा नहीं करेगा जिससे उसके परिवार का मान मर्दन हो.

मदन की बचपन का केंद्र उसकी माँ के भावनात्मक सहयोग के इर्द गिर्द घूमता था जिसने उसके चरित्र को आकर देने में मदद की थी. उसका जुझारूपन और धैर्य ने कठिन समय में परिवार को सहारा दिया।

मदन के पिता के व्यक्तित्व में आदर का भाव था; पिता की एक नज़र युवा मदन के भीतर ज़िम्मेदारी का भाव लाने के लिए पर्याप्त थी. मदन की यादों में पारिवार के सैर-सपाटे के वो दिन अंकित थे जहाँ स्नैक्स लेकर पूरा परिवार तलैया में स्थित तालाब के किनारे पिकनिक मानाने जाया करते थे. मंदिर के दर्शन परिवार के लिए सैर सपाटे की तरह मज़ेदार बन गये खासतौर पर बच्चों के लिए. विशेषकर पड़ोस के शंकर मंदिर में परिवार की प्रगाढ़ आस्था थी.

परिवार की भक्ति सावन के महीने में ख़ास तौर पर दिखाई देती थी जब पूरा परिवार 200 किलोमीटर की नंगे पैर तीर्थयात्रा में शामिल होता था और हर साल देवोघर और बैसुखीनाथ की वार्षिक धार्मिक यात्रा में शामिल होता था.

उपसंहार

शारदा परिवार का खनन, क्रशर और क्रशर के पुर्जो का सनयोजन उनके व्यापर की आधारशिला बन गयी. इस व्यापर की गहरी समाज ने उन्हें माइका व्यापर के क्षेत्र में काफी प्रतिष्ठा दिलाई . इस सफलता के रथ पर सवार होकर उन्होंने अपने व्यापर को और विस्तारित करके उसके नए क्षितिज विकसित करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया था. अपने कार्य क्षेत्र को व्यापकता देकर उन्होंने निरंतर सीखते जाने और अपने जोखिमों को कम करने की अनूठी कवायद को आकार दिया था.

रायगढ़ संयंत्र मदन और उसके पुराने मित्र द्वारा अधिकृत एक एक नया प्रतिष्ठान था. प्रारंभ में, ये संयत्र बहुत घाटे में जा रही थी क्योंकि इसके सञ्चालन में दिशानिर्देश का अभाव था. लेकिन अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, मदन और प्रदीप ने कार्यभार संभाला और पूरे संयत्र का कायापलट कर दिया। लीन मैनेजमेंट व्यवस्था लागु करके उन्होंने संयत्र का सञ्चालन बदल दिया और उसे मुनाफे में पंहुचा कर ही डैम लिया. यह शारदा समूह की कुशलता का प्रमाण था जो संघर्षरत उद्यमों को लाभदायी व्यवसायों में बदलने में सखशाम थी.

हालाँकि, इस पड़ाव में अभी और मोड़ आने बाकि थे। प्लांट का मालिक, जो शुरू में संयत्र को बेचने के लिए उत्सुक था, उसने अपना इरादा बदल दिया और शारदा समूह के साथ अपनी साझेदारी ख़तम करने का फैसला कर लिया. मदन ने इस समस्या को सुलझाने का बहुत प्रयास किया लेकिन कोई समाधान न निकलते हुए देखकर मदन ने इस साझेदारी को तोड़कर कोडरमा वापस लौटने का निश्चय किया. लेकिन किस्मत को शायद कुछ और ही मंज़ूर था.

Shanti with sister in law Lata

प्रदीप को स्पंज आयरन के व्यवसाय के विचार के लिए रायगढ़ एक आदर्श जगह लगी. प्रदीप का दृढ़ विश्वास, उसकी बाज़ार अंतर्दृष्टि और संसाधनो की उपलब्धता ने उन्हें आश्वस्त किया कि ऐसा था उनके पारिवारिक व्यवसाय के विस्तार का यही सही मार्ग है. प्रदीप के अकूत विश्वास के बावजूद भी मदन को इसमें लगने वाली पूँजी को लेकर संदेह था. अंततः उन्होंने एक समाधान ढूंढ लिया गया -निवेश जोखिम साझा करने के लिए साझेदारी में व्यापर करना । विभिन्न निवेशकों के साथ बैठकें हुईं, जिससे ये तय हुआ कि मदन और प्रदीप को व्यवसाय में 20-20% का हिस्सा मिला जबकि बाकि हिस्सा अन्य साझेदारों के बीच बराबर रूप से बाँट गया. संयंत्र का भूमिपूजन समारोह 13 जुलाई 2004 को हुआ और 26 जनवरी 2005 को यहाँ उत्पादन शुरू हो गया ।

आश्चर्यजनक रूप से छह महीने के भीतर ही संयंत्र, एक इंडक्शन भट्टी और एक रोलिंग मिल के साथ सक्रीय हो गयी हालाँकि, साझेदारियाँ अपने साथ कई चुनातियाँ लेकर आती है। जब चीन से सस्ते इस्पात के कारण इसका बाजार मंदा पड़ने लगा तो साझेदारों के बीच भी तनाव बढ़ने लगा । उनके भिन्न-भिन्न हितो के चलते कोई भी नुकसान में बराबरी का हिस्सा लेने को तैयार नहीं था जिससे जल्दी ही इस साझेदारी का विघटन हो गया. इसी बीच रामगढ का संयत्र भी शारदा परिवार के स्वामित्व में आ गया .

समय के साथ, शारदा परिवार का व्यवसाय नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया, जिससे मदन के पिता की दूरदर्शी आकांक्षाएं भी पूरी हो चली.

अपने पूरे जीवन में, मदन को ऐसे पलों का सामना करना पड़ा जिन्होंने उसके सब्र और हौसले का इम्तिहान लिया. हर बार उसके दृढ़ संकल्प और अडिग भावना ने उसे आगे बढ़ाया. कई बार गर्त में धकेले जाने के अनुभव ने उसे निडर बना दिया. बहुतों ने उसके फौलादी जिगर और अटल इच्छाशक्ति को तो देखा लेकिन कुछ ही लोगों ने उस यात्रा को समझा जिसने उसकी इस दृढ इच्छाशक्ति का आधार तैयार किया. अनगिनत मुसीबतों का सामना करने से उसे जीवन का नया परिपेक्ष्य मिला - चुनौतियों का डटकर सामना करना, ये सोचकर कि जीवन में उन्होंने इससे भी बुरे क्षणों का सामना किया.

कानूनी मामला आगे बढ़ा और अंततः मदन को अदालत ने आख़िरकार निर्दोष घोषित कर दिया. इस हालात पर पर उनकी प्रतिक्रिया उनके बारे में बहुत कुछ बयान करती है- खुद को बचाने कि जगह उन्होंने दूसरो के घावों पर मरहम रखने को प्राथमिकता दी. उनके कार्य उनकी सत्यनिष्ठा और करुणा का जीता जागता प्रमाण थे करुणा, जिसके बूते उसे दोषमुक्ति मिली।

यहां तक कि उसके विरोधियों ने भी मदन के असली चरित्र को पहचान लिया। शांति बहाल करने के उनके प्रयास और इसमें शामिल सभी लोगों के लिए उनकी चिंता ने उन्हें हर तरफ से मान दिलाया. इस प्रतिष्ठा ने मदन को एक समाज में सम्माननीय व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया और उनकी कड़ी मेहनत, दयालुता, और अनुकरणीय आचरण ने उन्हें कई लोगों के लिए एक आदर्श व्यक्ति के रूप में स्थापित किया.

Ashes that made the tree Bloom

No. of pages, No. of words, Pictures
112 pages, 10,729 words, 48 pictures

Book Size
A5, Hard Bound
(with jacket)

Kagaz ke Phool

Writers and Designers of Private Biographies

"Preserving the story of your family
for your future generations"

Scan to go to
our website

To know more find us online

www.kagazkephool.com | kagazkephool™